International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बैंथम तथा मिल का उपयोगितावाद

डॉ.सुमित्रा चारण
व्याख्याता,दर्शनशास्त्र विभाग
राजकीय डूंगर महाविधालय,बीकानेर(राज)

उपयोगितावादी दर्शन की आधारशिला सुखवादी दर्शन में निहित है।नीतिशास्त्र में सुखवाद वह दार्शनिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार जीवन का एकमात्र लक्ष्य सुख है। इसके प्रवर्तक अरिस्टिपस है।सामान्य रूप से सुखवाद के दो भेद –मनोवैज्ञानिक सुखवाद तथा नैतिक सुखवाद है।

- मनोवैज्ञानिक सुखवाद – यह सिद्धान्त मनुष्य के स्वभाव का वर्णन करता है और यह बताता है कि व्यक्ति का स्वभाव ही है कि वह सदैव सुख की खोज करता है।
- नैतिक सुखवाद – नैतिक सुखवाद मनुष्य को यह निर्दिष्ट करता है कि उसे कौनसा कार्य करना चाहिए तथा कौनसा कार्य नही करना चाहिए।नैतिक सुखवाद मनुष्य द्वारा किये जाने वाले तथा नही किये जाने वाले कार्यो का आधार उनके माध्यम से प्राप्त सुखों को ही मानता है।इस प्रकार नैतिक सुखवाद व्यक्ति को यह बताता है कि उसे क्या करना है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को वही कार्य करने हैं जिससे अधिकतम सुख मिले तथा उन कार्यो का त्याग कर देना चाहिए जिससे उसे दुखों की प्राप्ति होती हो।नैतिक सुखवाद के दो भेद हैं –

➢ स्वार्थमूलक नैतिक सुखवाद –इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति के वे ही कार्य शुभ तथा नैतिक दृष्टि से उचित माने जाते है जिनसे स्वयं उसे अधिकतम सुख की प्राप्ति होती है।

➢ परार्थमूलक नैतिक सुखवाद – इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति के वे कार्य शुभ हैं जिनसे अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख की प्राप्ति हो।

उपयोगितावाद नैतिक सुखवाद के ही परार्थमूलक सुखवाद का विकसित रूप है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति के वे कर्म शुभ है, जिनसे अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख मिले।

उपयोगितावाद के जनक जरमी बैंथम माने जाते है ।बैंथम के अतिरिक्त उपयोगितावाद के समर्थकों में जेम्स स्टुअर्ट मिल तथा हेनरी सिजविक का नाम उल्लेखनीय है।

- जरमी बैंथम का उपयोगितावाद – उपयोगितावाद के प्रवर्तक जरमी बैंथम ने उपयोगितावाद का प्रारम्भिक स्वरूप प्रस्तुत किया जिसे कि निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है–
  - सुखमूलक उपयोगितावाद – बैंथम का उपयोगितावाद सुख–मूलक उपयोगितावाद कहलाता है क्योंकि बैंथम अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाता है।बैंथम ने अपने सुखमूलक उपयोगितावाद में मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक सुखवाद दोनों को

ही स्वीकार किया था।

- सुखों में केवल मात्रात्मक भेद – बैंथम सुखों में केवल मात्रात्मक भेद मानता है। उसके अनुसार सुखों में कोई गुणात्मक भेद नहीं होता है। इसी कारण उनका उपयोगितावाद निकृष्ट और परिमाणात्मक है।
- सुखकलन का सिद्धान्त – बैंथम ने सुखों की मात्रा को मापने के लिये सुखकलन का सिद्धान्त दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार सुखों की मात्रा को निम्नलिखित सात तत्त्वों के आधार पर मापा जा सकता है – तीव्रता, अवधि, निश्चितता, निकटता, उत्पादकता, शुद्धता और व्यापकता।

बैंथम का यह सिद्धान्त सुखों को मापने में सहायक नहीं है क्योंकि ये सातों विशेषताएँ एक साथ किसी कार्य में उपलब्ध नहीं हो सकती और यदि दो कार्यों में ये विशेषताएँ विभाजित है तो फिर किस कार्य को किया जाये ? इस प्रश्न का उत्तर बैंथम नहीं देता है।सुखकलन के सिद्धान्त का व्यापकता रूपी तत्त्व बैंथम की उपयोगितावाद बनाता है।

- मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद का समर्थन – बैंथम मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद का समर्थन करते हुए यह कहते हें कि व्यक्ति सदैव अपने स्वार्थ की पूर्ति की कोशिश करता है और वह स्वभाव से ही स्वार्थी है।
- मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद से उपयोगितावाद तक पहुँचने का मार्ग है – बैंथम के अनुसार व्यक्ति कभी भी दूसरों के हित का कार्य नहीं करना चाहता किन्तु चार प्रकार के दबावों के कारण वह अधिकतम लोगों के हित के लिये कार्य करने लगता है।
  - ➢ भौतिक दबाव – बैथम के अनुसार व्यक्ति की शारीरिक योग्यता तथा भोग की एक सीमा है ।इसी कारण स्वार्थी होने के उपरान्त भी मनुष्य अन्य लोगों के अधिकतम सुख के लिए प्रयास करता है।
  - ➢ राजनैतिक दबाव – राज्य के विभिन्न कानून व्यक्ति को बाध्य करते हैं कि वह अधिकतम हित के लिये कार्य करे।
  - ➢ सामाजिक दबाव – बैंथम का मानना था कि व्यक्ति समाज के दबाव तथा समाज के मध्य अपनी अच्छी छवि बनाने के लिए भी जनहित के कार्य करता है।
  - ➢ ईश्वरीय/धार्मिक दबाव – कोई भी व्यक्ति पारलौकिक सुखों की प्राप्ति के लिए भी अधिकतक लोगों के अधिकतम सुख के लिए प्रयास करता है और इसे ही बैंथम ने धार्मिक दबाव कहा है।

बैथम अपने उपयोगितावाद में यह स्वीकार करता है कि सभी व्यक्तियों के सुख समान महत्व रखते है इसे ही सुखों की निष्पक्षता का सिद्धान्त कहा जाता है।

- जॉन स्टुअर्ट मिल का उपयोगितावाद – जॉन स्टुअर्ट मिल ने बैंथम के उपयोगितावाद में संशोधन किया । जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने विचार अपनी पुस्तक 'यूटिलिटेरियनिज्म में प्रस्तुत किये थे। जॉन स्टुअर्ट मिल के उपयोगितावाद को निम्नलिखित शीर्षकों के द्वारा समझा जा सकता है –
  - सुखमूलक उपयोगितावाद – बैंथम का उपयोगितावाद सुख–मूलक उपयोगितावाद कहलाता है क्योंकि बैंथम अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाता है।बैंथम ने अपने सुखमूलक उपयोगितावाद में मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक सुखवाद दोनों को ही स्वीकार किया था।मनोवैज्ञानिक सुखवाद के आधार पर नैतिक सुखवाद को सिद्ध करना – मिल के अनुसार किसी वस्तु के दृष्य होने का प्रमाण है कि लोग उसे सुनते हैं और सुख प्राप्ति के लिये कार्य करने का प्रमाण है कि व्यक्ति सुख की इच्छा रखते हैं।
  - उत्कृष्ट उपयोगितावाद – बैंथम के विपरीत मिल सुखों में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के भेद स्वीकार करता है।बैंथम ने कहा था कि यदि सुख की मात्रा समान हो तो 'पुष्पिन' (खेल), कविता पाठ के समान महत्त्व रखता है।बैंथम के इस दृष्टिकोण के विरूद्ध मिल कहते हैं – एक सन्तुष्ट सूअर होने की अपेक्षा एक असन्तुष्ट मनुष्य होना श्रेष्ठ है और एक सन्तुष्ट मूर्ख होने की अपेक्षा असन्तुष्ट सुकरात होना अधिक श्रेष्ठ है।मिल गुणात्मक सुखों को प्राथमिकता प्रदान करता है।
  - सुखों में गुणात्मक भेद का निर्धारण कौन करेगा ?–मिल के अनुसार सुखों में गुणात्मक भेद का निर्धारण ऐसा अनुभवी व्यक्ति कर सकता है जिसने सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त किया है।
  - सुख ही एकमात्र साध्य–जेम्स स्टुअर्ट मिल के अनुसार सुख ही एकमात्र साध्य है किन्तु बाद में अन्य वस्तुएँ (साधन) साध्य बन जाती है ।इसे सिद्ध करते हुए मिल कहते है कि प्रारम्भ में व्यक्ति सुख को ही जीवन का लक्ष्य मानता है और धन, नौकरी, उन्नत्ति इन सब को सुख का साधन को मानता है।किन्तु एक निश्चित समय के बाद धन, नौकरी, पद–प्रतिष्ठा जैसे – साधन व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य बन जाते हैं।
  - <u>मनोवैज्ञानिक सुखवाद से उपयोगितावाद तक–</u>मिल के अनुसार व्यक्ति सदैव सुख की खोज करता है किन्तु वह 5 प्रकार के दबावों के कारण उपयोगितावादी बन जाता है। ये दबाव है –भौतिक दबाव,राजनैतिक दबाव,सामाजिक दबाव,धार्मिक दबाव तथा आन्तरिक दबाव।आन्तरिक दबाव का अर्थ है अन्तरात्मा की आवाज जिसके कारण व्यक्ति दूसरों के हित के बारे में भी सोचता है।बैंथम की भाँति मिल यह स्वीकार करता है कि सभी व्यक्तियों के सुख का समान महत्त्व है जो निष्पक्षता या समानता का सिद्धान्त कहलाता है।

सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट हो जाता कि उपयोगितावाद एक परिणाम सापेक्ष नैतिकता का सिद्धान्त है जिसे बैंथम तथा जेम्स स्टुअर्ट मिल ने एक–दूसरें से भिन्न रूप में प्रस्तुत किया जिसके कारण बैंथम

का उपयोगितावाद निकृष्ट तथा जेम्स स्टुअर्ट मिल का उपयोगितावाद उत्कृष्ट उपयोगितावाद माना गया है।

समग्र रूप में उपयोगितावाद की आलोचना इस कारण से की जाती है क्योंकि यह सिद्धान्त सभी के कल्याण की बात नहीं करता और केवल अधिकतम लोगों के अधिकतम हित को अपना लक्ष्य घोषित करता है।इसके अतिरिक्त यह सिद्धान्त यह नहीं बताता कि अधिकतम व्यक्तियों के न्यूनतम सुख को महत्त्व दे या न्यूनतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख को।इसके अतिरिक्त यह सिद्धान्त अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करने में भी सक्षम नहीं है ।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.या.मसीह,पाश्चात्य दर्शन समीक्षात्मक इतिहास

2.डॉ. शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण(थेलिस से हीगल तक)

3.डॉ. नित्यानंद मिश्र,समकालीन पाश्चात्य दर्शन

4.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

5.चन्द्रधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन

6.डॉ.शोभा निगम,पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय

7.हरिशंकर उपाध्याय,पाश्चात्य दर्शन का उदभव और विकास

8.नरेश प्रसाद त्रिपाठी,भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन

9.फ्रैंक थिली,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

10.प्रो.दयाकृष्ण,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

11.डॉ.ब्रहमस्वरूप अग्रवाल,पाश्चात्य दर्शन

12.डॉ.जगदीशचन्द्र जैन,पाश्चात्य समीक्षा दर्शन

13.डॉ.शशी भार्गव,पाश्चात्य दर्शन

14.प्रो.राजेन्द्र प्रसाद,दर्शनशास्त्र की रूपरेखा

15.डॉ.वेदप्रकाश वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा

16.डॉ. वेदप्रकाश वर्मा,दर्शन विवेचना

17.अम्बिकादत शर्मा,समेकित पाश्चात्य दर्शन समीक्षा

18.गुलाबराय,पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास

19.शंशधर शर्मा,पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

20.अशोक कुमार वर्मा,नीतिशास्त्र की रूपरेखा(पाश्चात्य और भारतीय)

21.डॉ.नित्यानंद मिश्र,नीतिशास्त्रःसिद्धान्त और व्यवहार

22.सुधा चौधरी,नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार

y